

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

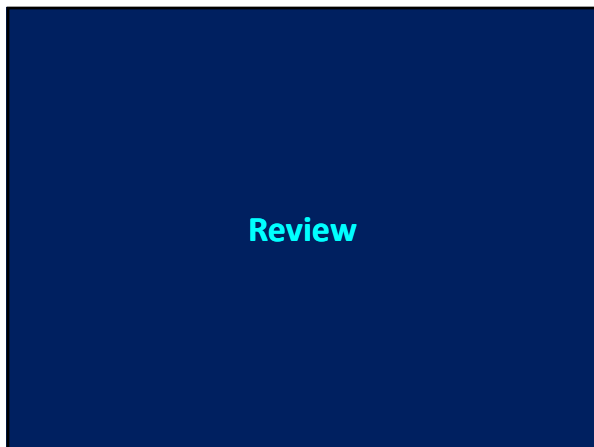
---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Answering Eight Questions

- 1) Who wrote it? – Paul
- 2) Who was it written to? – Roman Believers
- 3) Where was it written from? – Corinth
- 4) When was it written? – A.D. 57
- 5) Why was it written? – Doctrinal Foundation
- 6) What is inside? – 7 Part Outline
- 7) What is it about? – Righteousness
- 8) What makes the book different? – Theological formality




---

---

---

---

---

---

---

---

### Structure

- I. Salutation (1:1-17)
- II. Sin (1:18–3:20)
- III. Salvation (3:21–5:21)
- IV. **Sanctification (6–8)**
- V. Sovereignty (9–11)
- VI. Service (12:1–15:13)
- VII. Summation (15:14–16:27)




---

---

---

---

---

---

---

---

### Three Tenses of Salvation

Phase	Justification	Sanctification	Glorification
Tense	Past	Present	Future
Saved from sin's:	Penalty	Power	Presence
Scripture	Eph 2:8-9; Titus 3:5	Philip 2:12	Rom 5:10

---

---

---

---

---

---

---

---

## Sanctification (6–8)

- Believer's relationship to sin-6
- Believer's relationship to the Law-7
- **Believer's relationship to the Spirit-8**



---

---

---

---

---

---

---

---

## Believer's Relationship to Sin (Chapter 6)



- Believers set free from sin – 6:1-14

- Believer as a slave to righteousness – 6:15-23



---

---

---

---

---

---

---

---

## Believer's Relationship to the Law (7:1-25)

- 1) Believer's freedom from the Law (7:1-6)
- 2) Although the Law is holy sin used it to usher in death (7:7-12)
- 3) Although the Law is holy, it is powerless to deliver someone from sin (7:13-25)

---

---

---

---

---

---

---

---

**Believer's Relationship to the Spirit (8:1-39)**

- 1) Spirit transferred us from death to life (8:1-11)
- 2) We are not obligated to the flesh but to the Spirit (8:12-17)
- 3) We endure suffering now in the hope of future glory (8:18-30)
- 4) We are secure in Christ (8:31-39)



---

---

---

---

---

---

---

---

**Spirit Transferred us From Death to Life (8:1-11)**

- 1) Life in the spirit frees the believer from condemnation (8:1-4)
  - a. No condemnation for the believer (1)
  - b. Spirit frees the believer from condemnation and death (2)
  - c. God condemned sin through Christ (3-4)



---

---

---

---

---

---

---

---

**Solution (7:24-25)**

- 1) Problem stated (7:24a)
- 2) Cry for a solution (7:24b)
- 3) Answer to the problem (7:25a)
- 4) Ensuing conflict (7:25b)



---

---

---

---

---

---

---

---

Spirit Transferred us From Death to Life (8:1-11)

2) Indwelling ministry of the Spirit will empower believers (8:5-11)

a. Spirit and flesh pursue opposite agendas (5-8)



b. Empowerment by the Spirit (9-11)

---

---

---

---

---

---

---

---

Believers Are Obligated Not to the Flesh; To the Spirit (8:12-17)

1) Our obligation to the Spirit; not the flesh (12)

2) Flesh = death; Spirit = life (13)



3) Life in the Spirit described (14-17)

---

---

---

---

---

---

---

---

Life in the Spirit Described (8:14-17)

1) We are now led by the Spirit (14a)

2) Consequences (14b-17)

a. Leading indicates sonship (14b)

b. Sonship indicates childship (15-16)

c. Childship indicates heirship (17)



---

---

---

---

---

---

---

---

## Conclusion

---

---

---

---

---

---

---

---

### Believer's Relationship to the Spirit (8:1-39)

- 1) Spirit transferred us from death to life (8:1-11)
- 2) We are not obligated to the flesh but to the Spirit (8:12-17)
- 3) We endure suffering now in the hope of future glory (8:18-30)
- 4) We are secure in Christ (8:31-39)



---

---

---

---

---

---

---

---